

---

# Dharmapuri Narahari Stuti

धर्मपुरीनरहरीस्तुतिः

## Document Information

---

Text title : Dharmapuri Narahari Stuti

File name : dharmapurInaraharIstutI.itx

Category : vishhnu, koriDevishvanAthasharmA

Location : doc\_vishhnu

Author : koriDe vishvanAthasharmA, dharmapurI

Transliterated by : koriDe vishvanAthasharmA

Proofread by : koriDe vishvanAthasharmA

Acknowledge-Permission: Koride Vishwanatha Sharma

Latest update : February 19, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 22, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Dharmapuri Narahari Stuti

---

### धर्मपुरी-नरहरी-स्तुतिः

---



ॐ गँ गाणपतये नमः ।

नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् भरणाभूषितं भूषित प्रभम् ।  
जलधिपुत्रिका सेविताङ्घ्रिकं हरिनराकृतिं सैडिकाननम् ॥ १ ॥

नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ।  
हरिवराननं धातुकान्तकं श्रितजयप्रदं यङ्कधारिणम् ।  
भुजगशायिनं भूरिदायिनं नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ २ ॥

ऋषिवराश्रितं ऋग्भिरर्थितं विदितवेद्यं वेदगम्यकम् ।  
श्रितवरार्थिने कल्पवृक्षकं नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ ३ ॥

द्विजभुधैः सदा पूजितं स्तवैः दितिजबालकप्राणरक्षणो ।  
दितिजमन्दिरे स्तम्भसम्भवं नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ ४ ॥

सुजनभक्तकान् सक्तारक्षकं कुजनशिक्षणो सक्तचित्तकम् ।  
मकरमौषिकात् नागरक्षकं नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ ५ ॥

सुरपतेः सुभात् सञ्चयाघगां मुनिसतीं वरां पादुकोद्धृतम् ।  
निरतभाविनां पापनाशकं नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ ६ ॥

विडितपापधिं कालकालगं हरिरितीरितं निर्मलङ्करम् ।  
यदियमुच्यतेऽजामिलादिना नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ ७ ॥

निगमरक्षणो मत्स्यकायिनं अमृतसाधने दूर्ध्ववेषिनम् ।  
अवनिपालने श्रीवराडकं नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ ८ ॥

दनुजमारणो सैडिकाननं बलिविमर्दने वामनाकृतिम् ।  
कुपतिभञ्जने भागवद्विजे नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ ९ ॥


रघुकुलोद्भवं रावणान्तकं द्रुपदात्मजावने कृष्णरूपिणम् ।  
शमनसाधने बुद्धरूपिणं नरहरिं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ १० ॥

कलिविमर्दने कल्किदेहिने अभयरूपिणां आश्रिताश्रयम् ।  
नतमुज्ज्वलस्म्यङ्गं नैकधाकृतिं नरहरीं भजे धर्मपूर्विलुम् ॥ ११ ॥


एति कोरिडे विश्वनाथशर्माविरचिता धर्मपुरीनरहरीस्तुतिः समाप्ता ।

Composed by Koride Vishwanatha Sharma, Dharmapuri, Telangana  
Proofread by Koride Vishwanatha Sharma.

---

——  
*Dharmapuri Narahari Stuti*

pdf was typeset on November 22, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

